(5) Geography

Date
Page

Ans→ खाद्य फसलों में चावल, गेहूँ, मोटे अनाज तथा दालों का प्रमुख स्थान है।

1. चावल (Rice) — चावल हमारी सबसे अधिक महत्वपूर्ण खाद्य फसल है. जिस पर भारत की आधी से भी अधिक जनसंख्या निर्भर करती है

भौगोलिक परिस्थितयाँ

i) तापमान —
चावल की खेती के लिए तापमान 20°c से 30°c होना चाहिए।

ii) वर्षा —
वर्षा 75 cm से अधिक होनी चाहिए। जिन प्रदेशों में वर्षा की कमी है वहाँ सिंचाई की सहायता से चावल की खेती की जाती है, जैसे - पंजाब, हरियाणा एवं राजस्थान में।

iii) मिट्टी — चावल की खेती के लिए चिकनी मिट्टी की आवश्यकता है जिसमें पानी ठहरा रहे। चावल की सफल खेती है के लिए मिट्टी का PH 5 से 8 की सीमा के अंतर्गत होनी चाहिए।

iv) जमीन — चावल की खेती में समतल भूमि का बड़ा महत्व है।

v) उत्पादन क्षेत्र — देश में प्रमुख धान उत्पादन राज्यों में पश्चिम बंगाल, उत्तर-प्रदेश, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, पंजाब, उड़ीसा,

Scanned with CamScanner

⑥ Creography

बिहार व छत्तीसगढ़ है। (पूरे देश में 36.95 मिलीयन हेकटेयर में धान की खेती होती है) मिस्त्र, इटली, स्पेन, ब्राजील, यू.एस.ए. अन्य प्रमुख उत्पादक देश है।

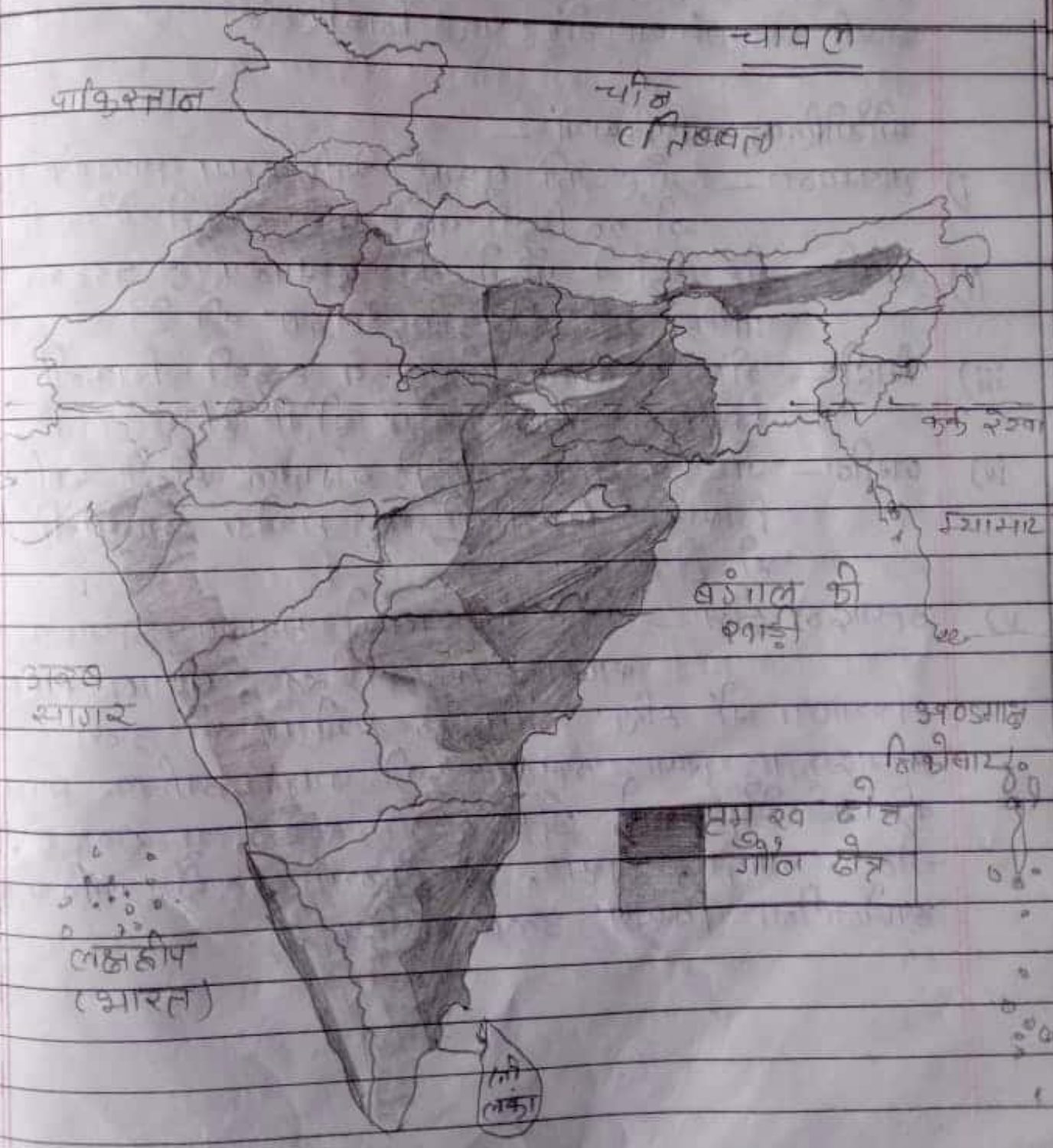

व फलदार वृक्ष है। इस प्रकार की अधिकतर भूमि व्यक्तियों के निजी स्वामित्व में है

vi) कृषि योग्य व्यर्थ भूमि (culturable waste land)– वह भूमि जो पिछले पाँच वर्षों तक या अधिक समय तक परती या कृषिरहित है। इस संवर्ग में सम्मिलित की जाती है। भूमि उद्धार तकनीक द्वारा इसे सुधार कर कृषि योग्य बनाया जा सकता है

vii) वर्तमान परती भूमि (current fallow)– वह भूमि जो एक कृषि वर्ष या उससे कम समय तक कृषि-रहित रहती है। वर्तमान परती भूमि कहलाती है भूमि की गुणवत्ता बनाए रखने हेतु भूमि का परती रखना एक सांस्कृतिक चलन है इस विधि से भूमि की क्षीण अथ उर्वरकता या पौष्टिकता प्राकृतिक रूप से वापस आ जाती है

viii) पुरातन परती भूमि (Fallow other than current fallow)– यह भी कृषि योग्य भूमि है जो एक वर्ष से अधिक लेकिन पाँच वर्षों से कम समय तक कृषिरहित रहती है। अगर कोई भूभाग पाँच वर्ष से अधिक समय तक कृषि रहित रहता है तो इसे कृषि योग्य व्यर्थ भूमि संवर्ग में सम्मिलित कर दिया जाता है।

ix) निवल बोया क्षेत्र (Net area sown)– वह भूमि जिस पर फसलें उगाई व काटी जाती हैं। वह निवल बोया गया क्षेत्र कहलाता है।

Scanned with CamScanner

के क्षेत्रफल में वृद्धि दर्ज हो सकती है परंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वहाँ वास्तविक रूप से वन पाए जाएँगी।

ii) बंजर व व्यर्थ-भूमि (Barren and wasteland) — वह भूमि जो प्रचलित प्रौद्योगिकी की मदद से कृषि योग्य नहीं बनाई जा सकती, जैसे - बंजर पहाड़ी भूभाग, मरुस्थल, खड्ड आदि को कृषि अयोग्य व्यर्थ-भूमि में वर्गीकृत किया गया है।

iii) गैर कृषि-कार्यों में प्रयुक्त भूमि (Land Put to Non-agricultural uses): — इस संवर्ग में बस्तियाँ (ग्रामीण व शहरी) अवसंरचना (सड़कें, नहरें आदि) उद्योगों, दुकानों आदि हेतु भू-उपयोग सम्मिलित है। द्वितीयक व तृतीयक कार्यकलापों में वृद्धि से इस संवर्ग के भू-उपयोग में वृद्धि होती है।

iv) स्थायी चरागाह क्षेत्र (Permanent Pastures) — इस प्रकार की अधिकतर भूमि पर ग्राम पंचायत या सरकार का स्वामित्व होता है इस भूमि का केवल एक छोटा भाग निजी स्वामित्व में होता है। ग्राम पंचायत के स्वामित्व वाली भूमि को 'साझा संपत्ति संसाधन' कहा जाता है।

v) विविध तरु-फसलों व उपवनों के अंतर्गत क्षेत्र (Area under miscellaneous tree crops and groves) (जो बोए गए निवल क्षेत्र में सम्मिलित नहीं हैं) — इस संवर्ग में वह भूमि सम्मिलित है जिस पर उद्यान

2) भारत में कृषि भू-उपयोग का वर्णन करें।

ans भू-संसाधनों का महत्व उन लोगों के लिए अधिक है जिनका आजीविका कृषि पर निर्भर है।

i) द्वितीयक व तृतीयक आर्थिक क्रियाओं की अपेक्षा कृषि पूर्णतया भूमि पर आधारित है। उन शब्दों में, कृषि उत्पादन में भूमि का योगदान अन्य सेक्टरों में इसके योगदान से अधिक है। अतः ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनता प्रत्यक्ष रूप से वहाँ की गरीबी से संबंधित है।

ii) भूमि की गुणवत्ता कृषि उत्पादकता को प्रभावित करती है जो अन्य कार्यों में नहीं है।

iii) ग्रामीण क्षेत्रों में भू-स्वामित्व का आर्थिक मूल्य के अतिरिक्त सामाजिक मूल्य भी है तथा प्राकृतिक आपदाओं या निजी विपत्ति में एक सुरक्षा की भाँति है एवं समाज में प्रतिष्ठा बढ़ाता है।

3) सस्यगहनता क्या है।

Ans-> सस्यगहनता का तात्पर्य फसलगत क्षेत्र और शुद्ध बोए गए क्षेत्र का अनुपात होता है सस्यगहनता को हम इस प्रकार प्रदर्शित कर सकते है।

$$\text{सस्यगहनता} = \frac{\text{सकल बोआ गए क्षेत्र}}{\text{निवल बोआ गया क्षेत्र}} \times 100$$

3) भारत में पाए जाने वाले प्रमुख फसल गेहूँ, चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, दाले के उपज के लिए भौगोलिक दशाओं को लिखें।

Scanned with CamScanner

Date
21/08/19

Ch-11 Geography (1)

भू-संसाधन और कृषि उपयोग

1) भू-संसाधन को क्या समझते हैं भू-उपयोग का वर्गीकरण करें।

Ans-) जो भूमि हमें उपलब्ध है उसका उपयोग कृषि, चारागाह, वन, भवनों, बाँधों एवं सड़कों के निर्माण, पार्क, खेल के मैदान आदि अनेक कार्यों के लिए किया जाता है। भू-उपयोग संबंधी अभिलेख भू-राजस्व विभाग रखता है यहाँ यह जानना आवश्यक है कि प्रतिवेदन (Reporting) क्षेत्र तथा भौगोलिक क्षेत्र में अन्तर होता है। भू-उपयोग संवर्गों का योग कुल प्रतिवेदन क्षेत्र के बराबर होता है दूसरी ओर भारत की प्रशासकीय इकाइयों के भौगोलिक क्षेत्र की जानकारी भारतीय सर्वेक्षण विभाग देता है। भू-राजस्व तथा सर्वेक्षण विभाग दोनों में मूलभूत अंतर यह है कि भू-राजस्व द्वारा प्रस्तुत क्षेत्रफल वर्षों के अनुसार रिपोर्टिंग क्षेत्र पर आधारित है जो कि कम या अधिक हो सकता है कुल भौगोलिक क्षेत्र भारतीय सर्वेक्षण विभाग के सर्वेक्षण पर आधारित है तथा यह स्थायी है

भूराजस्व अभिलेख द्वारा अपनाया गया भू-उपयोग वर्गीकरण निम्न प्रकार है

i) वनों के अधीन क्षेत्र (Forest)— यह जानना आवश्यक है कि वर्गीकृत वन क्षेत्र तथा वनों के अंतर्गत वास्तविक क्षेत्र दोनो पृथक हैं। सरकार द्वारा वर्गीकृत वन क्षेत्र का सीमांकन इस प्रकार किया जहाँ वन विकसित हो सकते हैं भूराजस्व अभिलेखों में इसी परिभाषा को सतत अपनाया गया है इस प्रकार इस संवर्ग

Scanned with CamScanner